प्रथम अध्याय

उपनिषदों के उपर श्री अरविन्द के कृतित्व का विवरण

उपनिषद् शब्द स्वयंवर किसी गुद्ध और धार्मिक ज्ञान का परिचय है। संभवतः इसी हेतु वेद के वार भाषाओं संस्कृत, ब्राह्मण, अर्थोर और उपनिषदों में से विद्वानों का तर्कात्मक ध्यान उपनिषदों पर हो केन्द्रित करा है। कुछ उपनिषद् तो स्पष्ट से किसी संस्कृत, अर्थोर और ब्राह्मण के हो अंश हैं, अथवा उनसे सम्बन्ध ही हैं। तत्त्वज्ञानी भी उन तीनों के तार सबसे ही हैं।

उपनिषदों पर सबसे प्रारंभिक और मान्य भाषा आराध्य शंकर का है। उनसे पूर्व उपनिषदों के उपर किसी अन्य विद्वान का भाष्य अथवा टीका प्राप्त नहीं है। उन्होंने जितने उपनिषदों पर भाष्य लिखा, विद्वानों के बीच यह तथ्य अण्वानि विवादास्पद है। सम्मान दर्श उपनिषदों पर ही उनका भाष्य प्राप्त होता है। ये उपनिषदों हैं --ईशा, केन, कथ, मुण्डक, माणुंडक, ऐतरे, तैत्तिरीय, प्राण, भानदय और ब्राह्मण। श्रेणीकाररूपी उपनिषद् पर भी परवरण काल में एक भाष्य प्राप्त हुआ है, जिसे कुछ विद्वान आराध्य शंकर का भाष्य बताते हैं।

उपनिषदों पर उनके द्वारा रचित भाष्य पर्याप्त विस्तृत है। शंकर उपनिषद् को एक झोंक विज्ञान स्तंभ पर उन्होंने पद-भाष्य और वाक्य-भाष्य नामक दो भाष्य लिखे हैं। पद-भाष्य में जो तथ्य दिली कारणकों कहने से घट गये हैं, उन्हें का विवेचन वाक्य-भाष्य में किया गया है। उन्होंने अपने भाष्य में प्रायः पूर्वपक्ष का दार्शनिक उठाया गया नहीं, प्रतिपक्ष का संदेह तथा अपने शिक्षणों का मण्डल किया है।

शास्त्र-भाष्य वैधिक परम्परा पर आधारित है। वैधिक ग्रामानुरूप आदि के अतिरिक्त वे संतार में अन्य भी कठोर को वर्णनार्थक मानते हैं। उनका विभक्तकोण "पद्म तन्त्र जगतित्वम्" के विश्लेष पर अवलम्बित है। उनके मत में
जगत् और कर्म दोनों हीं त्याज्य हैं। इसी कारण उनकी दृष्टि में जगत् को कोई तात्पर्यक सत्ता नहीं है। वह तो शुद्धित में रत्न के समान भूपेजित प्रतिमात्म मात्र है।

आयार्य शर्कर के परवर्ती काल में उपनिषदों पर कुछ अन्य विद्वानों के भाष्य भी प्राप्त होते हैं। उनमें से अधिकांश ने किसी भिन्न सिद्धांत को स्थापना न करके उन्हें का अनुममन किया है। कुछ विद्वानों अंग्रेज़ी विद्वानों ने भी उपनिषदों पर लेखन कार्य किया है, जिनमें मैक्स-मूलर, ई० रोर, पॉल डायतन, ह्यूम, कॉय आदि के नाम प्रमुख हैं।

मैक्स-मूलर ने वैदिक-साहित्य के विषय में यथार्थ लेख किया है। उन्होंने उपनिषदों पर भी बहुत कुछ लिखा है। द्रास्ता प्रमुख उपनिषदों का अनुवाद उन्होंने दो जिल्लों में किया है। उन्होंने "द उपनिषदस" प्रथम भाग में जान्दोग्य, केन, शेतरेश, कौशीतिक तथा इशोपिनिष्ठू का व्याख्या को दृष्टि से विश्लेषण अनुवाद किया है। गुण्य के द्वितीय भाग में उन्होंने करुणाक, जैत्यातिः, वृद्धार्थक, जैत्यातिः, गृहन, भृत्यारूपायमात्परपरिनिष्ठू का अनुवाद किया है। उन्होंने यदि प्रत्यक्षः शांकर भाष्य का अनुममन नहीं किया है, तथापि उसके सहायता अवव लो है।

उन्होंने उपनिषदों का अनुवाद करते समय शब्दों पर ही अपना ध्यान केन्द्रित किया है। इसीलिए श्री अरविन्द उन्हें संस्कृत के उत्कृष्ट विद्वान की अपेक्षा भाषा-विद्वानों और कौशीतिक अधिक मानते हैं। उन्होंने अपने अनुवाद में उपनिषदों

1. इशोपिनिष्ठू के अनुवाद के उपरांत उन्होंने विषय-अर्थक तथा कर्म आदि विषयों पर "नोट" लिखा है, उसका आधार शांकर-भाष्य ही है।
2. इशोपिनिष्ठू का अनुवाद करते समय उन्होंने उच्चता और महोधर के मात्र का निर्देश किया है। यह उपनिषदस वाजतेनय शाखा का वाल्लेटाक अध्याय है। इस शाखा को संशोधन पर उच्चता और महोधर का भाष्य प्राप्त है।
के गूढ़ अर्थ और उनकी मौलिकता पर ध्यान न देकर, शास्त्रिक स्तर पर ही उनका अर्थ तम्मि की मैटर को है जो उपनिषदों के सूत्र ग्रन्थों को समझने के लिए पर्याप्त नहीं है। इनमें पाता है अनेकता नियुक्त तत्त्व की प्राधान्यता है।

मेक्स-मूलर ने अपने ग्रन्थ में अनुवाद के नीचे जो नोट लिखे हैं वे भी उनके दृष्टिकोण अध्ययन निदानत के स्पष्टीकरण के लिए नहीं, अपितु अन्य विद्वानों द्वारा स्वीकृत अर्थ अथवा मतों के उल्लेखमात्र हैं। उन्होंने "द उपनिषदूल" ग्रन्थ के दोनों भागों के पूर्व में जो विश्लेषण भूमिका लिखी है वह उपनिषदों के इतिहास के समान्य में तो महत्वपूर्ण है किन्तु उनके तत्त्व को स्पष्ट करते हैं उनके लिए तत्त्वकारक नहीं है।

अतः यह तथ्य स्वतंत्र: स्पष्ट हो जाता है कि उनके द्वारा लिखित उपनिषदों का अनुवाद अथवा उपनिषदें पर रचित अन्य ताम्रणी भाषाविद्वान, व्याकरण आदि ऐतिहासिक ज्ञान की दृष्टि से महत्वपूर्ण हो सकती है, परन्तु उपनिषदों के तत्त्वकारक के साथ यह नूतन न्याय नहीं कर पाता है।

3TO रोर ने भी आंग्लभाषा में उपनिषदों का अनुवाद किया है।

उन्होंने प्रमुख-ईश्वर, केन, कठपुतली, मुनि, माण्डुक्य, तैतिरीय, पूर्व और पश्चिम-पश्चिम जैसे नौ उपनिषदों के अनुवाद के साथ-साथ संक्षिप्त रूप में शाकर-भाष्य का भी अनुवाद किया है। इसका भी अनुवाद शाकर-मत से प्रभावित है। ऐतिहासिक स्तर पर उन्होंने अपने अनुवाद में तथ्य अपना कोई वैश्विक नहीं दिखाया है।

कर्म और ज्ञान जैसे विवादास्पद तथ्यों पर भी उन्होंने केवल शाकर-भाष्य का उल्लेख और अनुवाद किया है, अपनी सहमति अथवा असहमति प्रकट नहीं की है। ईश्वरियों का अनुवाद करते समय, उनके द्वितीय मन्त्र में प्रयुक्त "कर्माणां" शब्द का अर्थ उन्होंने भी वैदिक वर्ण कर नहीं किया है। ऐतिहासिक भी उन्होंने इसी प्रकार शाकर-भाष्य का विवेचन किया है।

1. Performing sacred works (1) Let a man desire to live a hundred years.

Dr.E.Roar- The Upanishads, P.6
रोर ने भी अपने अनुवाद में भाषा पर ही विशेषरूप से ध्यान केन्द्रित किया है, जिसके बाद मात्र अनुवाद को ही केन्द्र में मिला जा सकता है। उन्होंने उपनिषद_की नूतनता तथा उसकी वेदांतिक निश्चितता को कोई महत्व नहीं दिया है। इनका अनुवाद प्रायः शांकरमाताँगुप्तसे है।

मैकस्मूलर और रोर के समान ही कोई भी उपनिषदों का अनुवाद किया है। उनके अनुवाद को भी इन दोनों विद्वानों के समान अनुवाद मात्र ही माना जा सकता है। वेदांतिक दृष्टिकोण से इनके अनुवाद का भी उपनिषद_साहित्य में कोई विभिन्न त्यान नहीं है।

आंगन-विद्वानों में सर्वाधिक तात्कालिक पील डायलॉग ने किया है। उन्होंने कोई मैकस्मूलर आदि के समान भाषा-विद्वान और वैदिकसाहित्य विशेषज्ञ का अनुवाद न करने, उपनिषदों को विश्व-वस्तु को आधार मात्र तात्कालिक विशेषज्ञ किया है। उनका गुण्य "द फिलासॉफ ऑफ द उपनिषद्स" उपनिषद_दर्शन के क्षेत्र में अन्य भी आंगन विद्वानों द्वारा रचित अनुवाद की अवधिक उच्चस्तरीय गुण्य है।

उन्होंने अपने गुण्य के तर्कपाय भूमिका भाग में उपनिषदों का इतिहास, वैदिक साहित्य में उनकी महत्ता तथा उनमें दर्शिता मूल तत्त्वों का संक्षिप्त परिचय देते हुए, आलमा, परमात्मा तथा जीव धैर्य अंतर्गतिक तत्त्वों के तोकोत्सर सम्बन्धों को विवेचना को है। इन तत्त्वों का उन्होंने प्रत्येक टुट्टिकोण से पूर्ण अध्ययन इस गुण्य में प्रस्तुत किया है। उन्होंने अन्य विद्वानों के साथ इन तत्त्वों के प्रत्येक पहलु को समीक्षा करते हुए, अपनी तबिजता अस्त्यार्थ की भी यथास्थान प्रकट किया है।

उन्होंने भारतीय विद्वानों के साथ-साथ विद्वानों विद्वानों के विचार तथा पारंपरिक दर्शन और भारतीय दर्शन के बीच सम्बन्धों और विविधताओं का भी ज्योत्तम विवेचन किया है। अस्तु, हीगल, लान्ट, जेल्टो आदि दार्स्सनिकों के क्षणों को भी यथास्थान तदन्त-दर्शन के परिचय में किया के व्यवहार के लिए उन्होंने उद्धृत किया है।

उन्होंने उपनिषदों में प्रचुर रूप से विकोर्ण पुनर्जन्म, मोक्ष आदि
सिद्धांतों को कमबख्त रूप में प्रस्तुत किया है। उन्होंने उपनिषदों में पृथक प्रतीकों तथा प्रतीकसूचक तत्त्वों का भी विशद विवेचन किया है।

भारतीय विद्वानों में गजेन्द्र गढकर, रानाडे, रायाकुशल आदि विद्वानों ने भी उपनिषदों के उपर तेज वाय कार्य किया है। रानाडे के द्वारा अपने "उपनिषद" नामक ग्रन्थ में उन्होंने विद्वानों के द्वारा स्वतंत्र रूप से उपनिषदों के विश्लेषण अध्ययन किया जा रहा है। इन दोनों विद्वानों ने केवल अनुवाद मात्र ही किया है। इनके अपेक्षा हालाँकि, "द प्रिंसिपल उपनिषद" नामक ग्रन्थ उपनिषदों के उपर अधिक तेजस्वीत और तर्कसंगत है।

उन्होंने ग्रन्थ के भूमिका भाग में अपने सिद्धांतों का स्पष्ट उल्लेख किया है। यथाप्राप्ति उन्होंने अंतर्भाषा: आचार्य शेखर के सिद्धांतों को आधार मानकर ही उपनिषदों का अनुवाद किया है। तथापि यह-तब उन्होंने आचार्य शेखर से वैभव्य भी प्रकट किया है। कर्म, अविध, मौन विद्वानः आदि सिद्धांतों पर उन्होंने केवल वैभव्य को प्रकट नहीं किया, अपना आचार्य शेखर की आलोचना भी की है। वे मन को पूर्णता को ही उच्चारित की स्थिति मानते हैं, जिसके लिए जगत अवधा क्रमों का परित्याग आवश्यक नहीं है। कोई भी व्यक्ति किसी भी अवस्था में विश्रां भाव से इत अवस्था को प्राप्त कर सकता है।

2. He who knows Brahman becomes Brahman, perfection is a state of mind.....in God who is the foundation and power of life.
Dr. Radhakrishnan - The Principal Upanishads, P. 113-119
वे आचार्य शंकर के समान मुक्ति को शून्यावस्था भी नहीं मानते हैं तथा
जीवन्मृत्तक के लिए सब कुछ ल्याए कर वनवास को भी आवश्यक नहीं समझते हैं।
उनके द्वारा मान्य जीवन्मृत्तक कम्यों का निर्वाचित करते हुए भी, उन्होंने लिखा न होने
की अवस्था है। वे जीवन्मृत्तक पूर्ख के लिए पुनर्जन्म लेना भी स्वीकार करते हैं,
जिससे वह अपने मुक्त स्वभाव के द्वारा अनय अन्नान्तों का मार्गदर्शन कर सके।

राधाकृष्णन द्वारा इस प्रकार तहसंगत सटीक तथ्यों को प्रस्तुत करने के
कारण हो उनका अनुवाद अन्य कभी अनुवादों की अपेक्षा उत्कृष्ट कोटि का माना
जाता है। उपर्युक्त सभी विद्वानों की रचनाओं का सम्बन्ध अवलोकन करने पर यह
निश्चित रूप से जाता है कि अंग्रेज़-विद्वानों ने भाषा, विद्वान, शब्दार्थ तथा पाठ-
स्तर, व्याकरण संगत अनुवाद पर अपना ध्यान केन्द्रित किया है। उन्होंने उपनिषदों
के भीतर निर्धित मूल तत्त्व को प्रायः नगण्य कर दिया है। उसी प्रकार भारतीय
विद्वानों ने भी उपनिषदों के ऊपर जो ऐसा कार्य किया है उसमें उपनिषदों के मूलभाव
और विद्वानों की अपेक्षा शंकर के विद्वानों का ही दीवेश्य किया है। अतः दोनों
की भूभारतीय एवं अंग्रेज़ी विद्वान उपनिषदों के ज्ञात होने की अपेक्षा इतिहास
और भाषाविद ही अधिक थे। अतः वे किसी विशिष्ट विद्वान का प्रत्यादान नहीं
कर सके।

आचार्य शंकर के उपराणान् श्री अरविन्द का ही नाम ऐसे विद्वानों में
सर्वोपरि निविद जा सकता है, जिन्होंने न केवल उपनिषदों का अनुवाद दी किया है,
अभित्र प्रायोगिक परम्परा का अनुवाद मात्र न करके, उपनिषद-पाठ के आधार पर, अपने
तहसंगत सटीक विद्वानों का भी प्रत्यादान किया है। उनके विद्वान शंकर के
पर्याप्त मिलन तथा स्वतन्त्र हैं। वे मात्र शंकर समस्त माया, ब्रह्म, मुक्ति आदि
तत्त्वों को स्वीकार नहीं करते हैं। आचार्य शंकर के मत में अर्थवाचीय माया नित्यना
अज्ञानस्तरक और भूमस्वरूप है। दूसरी ओर श्री अरविन्द माया को ज्ञान और अज्ञान

1. Those who have attained life eternal line and wander about in
the world...only their activities are centred in the highest
being and are completely under their central, which is not so
for those who live in the world of Samsara. They are tolerant,
sympathetic and respectful to the unliberated who are strugg-
ling with unsatisfied minds.
Dr. Radhakrishnan- The Principal Upanishads, P.129
दोनों ही चम्पें चलावी स्वीकार करते हैं। श्रान और अश्रान को वे माया के बेहद मानते हैं। इसी प्रकार जो जगत शंकर के लिए मिथ्या और (प्रतिभासिके) तत्ता स्वर्ग है वहीं श्री अरविन्द को दुःखित में ज्ञान के समान सत्य हो नहीं, स्वर्ग ज्ञान को इस अतिभक्ति है। जगत का कण-कण ज्ञान स्वर्ग है। जगत ही पुक्षा की कर्मस्थली है, जहाँ के वह ज्ञानवत् में लिप्यत्कर सकता है। दूसरों

वे ज्ञानवत् को प्राप्ति में कर्मों को आचरण सूत्र मानते हैं। दूसरों और आचरण शंकर मोक्ष के अधिकारी के लिए ही कर्मों का निर्धारण करते हैं। जहाँ वे कर्म को तर्कप्रकारण विद्वानाध्याय मानते हैं वहीं श्री अरविन्द कर्मों को ज्ञानप्राप्ति की आचरण पूर्वविच्छेद मानते हैं। उनके मत में कर्मों जो विलय अवस्था में संभव हो नहीं है, तथा कर्मों पुक्षा की समाज के लिए कोई उपयोगिता नहीं है। वे शंकर की भावित व्यविस्तार मोक्ष को पूर्ण आनन्द की अवस्था नहीं मानते हैं। उनका दुःखितक्रोण व्यविस्तार तुलना से अध्यात्मिक मुक्ति को अधिक महत्त्व प्रदान करता है। इसलिए वे "सामाजिक मोक्ष" के तिद्धान्त का प्रतिपादन करते हैं। उनका यह तिद्धान्त दार्शनिक मुख्ति से अधिक व्यवहारिक है। आज के वैज्ञानिक युग में उनके द्वारा नाचन "कर्म और श्रान के समुच्चय द्वारा मुख्ति का तिद्धान्त" सामाजिक मोक्ष की अवधारणा में पुक्षे ज्ञान के लिए लोक कल्याणार्थ पुर्णिमा की वैकल्प्य स्वयंकृति आदि तथ्य आचरण शंकर के दार्शनिक तिद्धान्तों की तात्कालिका पर एक पूर्ण विवेक लगा देते हैं।

श्री अरविन्द के यह तिद्धान्त उनके गुण्यों में पुष्त-अविकोण्ण हैं। लाइफ डिवाइन, वैज्ञातिक श्रान प्रोफ, एस्टेज आश्रयं भागवती आदि गुण्यों में उन्होंने उपनिषद के इन पुक्षा विन्दुओं पर प्रकाश डाला है। वर्तम "उपनिषदस" नामक ग्रंथ में

1. Sri Aurobindo, The Upanishads, P-29
   Sri Aurobindo, The Life Divine, P-116
2. All World and everything in world is Eternal is essential being, for all essential existence is Brahman without ending or beginning. Forms and names are also Brahman and Eternal. Sri Aurobindo- The Upanishads, P-513
उन्होंने विशेष रूप से उपनिषदों का अनुवाद तथा माया, ब्रह्म आदि तत्वों का विवेचन किया है। इस ग्रन्थ में उन्होंने तर्कप्रयास "उपनिषद दर्शन" नामक शैक्षक के अन्तर्गत, ब्रह्म, उसकी प्रकृति, उसके अनेक रूप क्षुद्रव्य ब्रह्म, सत्यिच्छावाद, पर-ब्रह्म, माया, उसके भेद इत्यादि दार्शनिक तत्त्वों एवं शब्दावली का विस्तृत विवेचन किया है। इन्होंने तत्त्वों को उन्होंने "लाइफ उड़ाइन" नामक ग्रन्थ में और अधिक विस्तार के साथ विविधता भेदो-उपभोक्ताओं सम्बंधित विवेचन किया है। विविधता उपनिषदों पर उनके द्वारा रचित उपनिषदों तथा उनके सिद्धांतों का अध्ययन में लाभ है। उनके द्वारा प्रमुख उपनिषदों का जो अनुवाद किया गया है वह प्रथम परिमाण को पुष्टि से बहुत विस्तृत नहीं है तथापि वे अपने सिद्धांतों को अन्य लामूरों में ही पूर्वस्मृति स्पष्ट कर सके हैं। वे प्रत्येक तत्त्व को पूर्वत्तं स्पष्ट करने में सक्षम हैं। उनके सिद्धांत कभी भी परम्परा के बाद नहीं हैं और न ही सद्यस्ताप्त शब्दावली के आवरण से आबू हैं।

उपनिषदों में विविधता तत्त्व प्रक्रिया को आयार शंकर जहाँ केवल अलौकिक तत्वों तथा दार्शनिक शब्दों के जाल से निरन्तर करके, अस्पष्ट बनाये रखते हैं वहां श्री अरविन्द ने इन्हें वैदिक तत्त्वों के आधार पर तर्क-संगत तत्त्वों की स्वाभाविक प्रक्रिया के रूप में स्वीकार किया है। उन्होंने अपने सिद्धांतों की पुष्टि उपनिषद-वचनों से ही प्रदान की है। शंकर ने उपनिषदों की व्याख्या करते समय अपने सिद्धांतों को उन पर आरोपित सा कर दिया है। दूसरों और श्री अरविन्द ने उपनिषद के मूल पाठ के आधार पर, उसके भाव को प्रमुखता प्रदान करते हुए, अपने सिद्धांतों को स्थापना की है। उनके उपनिषद सम्बन्धी सिद्धांतों को समझने के लिए उनके द्वारा अनुरूप संदर्भ उपनिषदों का प्रयोग विवरण आवश्यक है।

ईशोपनिषद — परिमाण को दृष्टि से ईशोपनिषद-पारंपरिक प्रमुख उपनिषदों में

[लगभग]। इसमें केवल अबाद विषय नहीं है। वर्तमान यह उपनिषद अन्य उपनिषदों की भरतिकोई पृथक् ग्रन्थ नहीं है। यह तो वाजसंभव तैसीता का

1. प्रवरप्रभुस्तु ।।
ही वालीसवाँ अध्याय है। आवकार में कम होने पर भी उपनिषद कार्यन्त्र में
इतना महत्वपूर्ण स्थान है। संज्ञा पर लिखित साधन, उच्च, महोधर
के भाष्यों के अतिरिक्त आचार्य शंकर ने भी इस पर भाष्य लिखा है। उनके
द्वारा रचित भाष्य भी लघु आवकार वाला ही है। किंतु श्री अरविन्द ने
अपना ध्यान अन्य उपनिषदों की अपेक्षा इस पर अधिक केन्द्रित किया है। अपने
"उपनिषद" नामक ग्रन्थ में उन्होंने सर्वप्रथम इस उपनिषद के मन्त्रों का अनुवाद
किया है, तथा हो यथास्थान अनुवाद के बोध में हो वारितामिक बाबरों का विस्तृत
विवेचन किया है। अनुवाद के नोट हो यिस नोट में शंकराचार्य द्वारा
मान्य अर्थ को उद्धृत किया है, तथा उनके मत-दृष्टिपत्र होने पर, अपने मत को पुष्टि
के लिए उससे सम्बन्धित वारितामिक तत्त्वों का प्रत्येक हृदय से विवेचन किया है।

ईशोपनिषद के मन्त्रों में प्राप्त कर्म, अमूर्य, मातरिश्वर, अपर, कन्व,
मनोवर, विधा-अधिक्य, त्रायुति, अत्मवृति, दूर इत्यादि शब्दों का अनुवाद करते
समय अधिकार स्वरूप, निकटतम तथा उपनिषद के मूलभाव को प्रकट करने वाले अर्थ
को स्थायित्व करने का उन्होंने प्रयास किया है। वारितामिक बाबरों के उपर शंकर
के मौलक न होने पर उन्होंने अपने द्वारा मान्य अर्थ को प्रतिभित हृदयकारणों से
समझाया है।

प्रमुख उपनिषदों का अनुवाद करने के उदाहरण इशोपनिषद का उन्होंने विस्तृत
विवेचन फैलाया है। मन्त्रों में प्राप्त व्यापक, दार्शनिक और सारगृहिता जगत
ही दृष्टि, अत्मा इत्यादि शब्दों पर उन्होंने बड़े-बड़े अनुक्षेत्रों के रूप में विवेचन किया
है। अनुवाद में जो तथ्य किसी प्रकार करने के बयान गये हैं उनका विस्तृत विवेचन
इनमें श्लोकों के क्रमांतर किया गया है। एक अनुक्षेत्र में एक ही तत्त्व का प्रतिपादन
करने वाले दूर श्लोकों का समूह बनाकर, उसमें प्रतिपादित विधा तथा सम्बन्धित शब्दों
देखकर, उन्होंने अपने मूल सिद्धान्त जैसे अनुसार श्लोकों में निर्दिष्ट तत्त्वों का विवेचन
किया है।

इन शब्दों के अन्तर्गत उन्होंने केवल उस उपनिषद अथवा श्लोक में वर्णित
1. Self realisation—Second Movement Verses—6.7 The threefold Purasha-Atman represents itself to the consciousness of the creative in three states, dependent on the relations between Purusha and Prakrti, the Soul and Nature. Three states are aksara unmoving or immutable, Ksara moving or mutable and Para or Uttama, Supreme or Highest.

Sri Aurobindo. The Upanishads, P-87

2. The Student—true but the robe is different from its wearer. The Guru—Let us consider a nut with the kernel in it, we see that ether is the form of Upadhi of the nut surrounds ether in the Upadhi of the Kernel as robe surrounds its wearer, but the two are the same.

Sri Aurobindo. The Upanishads, P-451
इसी प्रकार ब्रह्म, अक्षुण्ण, क्षमता, आत्मा, मन, बुद्धि, जीवन, मृत्यु, लग्न, चैतन्य, आनन्द, मुक्ति आदि दार्शनिक तत्त्वों को स्वप्न करने के लिए उन्हें परिमाण की गैलेख में छोटे-छोटे खंडों के रूप में तम्बाताया है।

उपनिषदों के उपर श्री अरविन्द का लेख क्रमबद्ध नहीं है। उनकी समस्त विषय सामग्री उनके अनुसार पर आयारित है। जब जैसी अनुरुत्त हुई, उसे वैसे ही उन्हें प्रस्तुत किया है। ईशोपिनिष्ट पर परिमाणकी दृष्टि के पर्याप्त सामग्री उपलब्ध है किन्तु वह भी क्रमबद्ध नहीं है। सर्वप्रथम इसके अनुसार को "कर्मयोगिन" नामक पत्रिका में सन 1909 में प्रकाशित किया गया। तत्परवात पुनः नरेश्न के बाद इसे "आर्य" नामक पत्रिका में सम्पूर्ण उपलब्ध होता है। साथ प्रकाशित किया गया। गृह्य के रूप में संस्कृति करने के लिए भी इसमें आधारकला-धारार संगठन और विकास किया गया।

प्रथम उपनिषदों के अनुसार में तबाहिक विषय सामग्री ईशोपिनिष्ट पर ही उपलब्ध है। उन्हें प्रत्येक दृष्टि से इस अत्यधिक परिमाणक उपनिषद के रहस्यों को उद्धारित किया है। इतना पर्याप्त लेख होने पर भी उन्हें प्रत्येक दिशानां के पर्याप्त उसके अनुसार उपरात्त का संशोधित किया है जिससे उनके गहन धितन तथा गम्भीर मनन का रहस्य स्पष्ट हो जाता है।

केनोपनिषद् -- ईशोपिनिष्ट के बाद श्री अरविन्द ने केनोपनिषद का अनुवाद किया, जो सर्वप्रथम सन 1909 में "कर्मयोगिन" नामक पत्रिका में प्रकाशित हुआ। सन 1915-1916 में इस अनुवाद को कुछ दिशानां के साथ "आर्य" पत्रिका में प्रकाशित किया गया। इस सामग्री को विस्तारित करके पूर्ण पुस्तक के रूप में 1952 में प्रकाशित किया गया। तदुपरान्त सन 1970 में इस पुस्तक को संशोधित और परिष्कृत करके "उपनिषदं" नामक गृह्य के एक खंड के रूप में प्रकाशित किया गया।

ईशोपिनिष्ट के उपरान्त श्री अरविन्द ने परिमाण की दृष्टि से अत्यन्त होते हुए भी केनोपनिषद पर विस्तृत लेख किया है। आधार शंकर ने भी
इत्यादि ते उपनिषदः पर मद्ध-भाष्य और वाक्य-भाष्य नामक दो भाष्यों की रचना
की है। इससे इत्यादि उपनिषदः को महत्ता परिलक्षित होती है। संबंधः इसी लिए
श्री अरविन्द ने भी पृथ्वी रूप में इसके ऊपर विलुप्त टिप्पणियाँ लिखी हैं।

सर्वप्रथम उन्होंने इत्यादि उपनिषदः का केवल अनुवाद किया है, ततपश्चादः
उन्होंने टिप्पणियाँ के रूप में इसका अनेक दृष्टिकोण विवेचन किया है। यथार्रूप
ये टिप्पणियाँ शाक्तभाष्य के समान बलों को संक्षेप में क्रमबद्ध नहीं हैं तथापि
इनका अध्ययन करते समय उपनिषदः में वर्णित तथ्यों के क्रमानुसार लेख का ही
आभास होता है। इनके अन्तर्गत उपनिषदः में प्रयुक्त यथार्रूप मन, ब्रह्म, बुद्धि, ज्ञान,
देवता, उमा, मोक्ष जैसे तत्त्वों के ऊपर विस्तृत समीक्षात्मक लेख किया गया है।

उपनिषदः क्रम में ही उन्होंने टिप्पणियाँ की रचना की है। सर्वप्रथम
उन्होंने ईशोपनिषदः की टिप्पणियाँ लिखी है तथा केनोपनिषदः की टिप्पणियाँ
लिखीं समय ईशोपनिषदः के साथ उसके तत्त्वों को हुलुलतात्मक समीक्षा की है। दोनों
का गतत्व यह होते हुए भी ईशोपनिषदः जहाँ समन्वयात्मक विच्छेद का अवलम्बन लेता
है, वहाँ केन विशेषक्षणात्मक विवेचन के द्वारा मोक्ष के मार्ग पर अग्रसर होने का
उपदेश करता है। इसी उपनिषदः के द्वितीय खण्ड में प्रथम मन्त्र में पृथ्वी गये प्रथम
के उत्तर के परिप्रेक्ष्य में बुद्धि, जीवनी शक्ति, प्राण तथा ग्राहनिन्द्रियों के विषय में
व्यख्या होती परस्पर तम्बूचों के विषय में विशेष चर्चा की गई है। इन तब तक
वालीमेल ही संसार का शान कराता है, तथा इनके पीछे विद्वान मन्त्र को उल्लेख
शक्ति ही इनका रिपोर्ट मामला तत्त्व है।

1. Isha Upanishad arrived by synthesis of all existences, the
Kena arrives at it by the antithesis—.
Sri Aurobindo. The Upanishads, P-162
2. But the whole universal action is one, not a sum of fortuitous
atoms, it is one arranged in its parts, comoved in its multi-
ple function ings by virtue of a single conscious existence
which can never be constructed or put together.
Sri Aurobindo. The Upanishads, P-162
विभिन्न मान्यताओं का खण्ड करते हुए समस्त जीव समुदाय में एकात्मतत्व की स्थापना की गई है। केनोपनिषद के अनुसार आत्मतत्व ही सर्वत्र है, दृष्टिमान जगत ही उसकी छाया मात्र है। \(^1\) पुरुष खण्ड में मन, बुद्धि, अहंकार, स्मृति, नैसर्गिक व्यक्तित्व इत्यादि व्रह्मतत्व का खण्ड करते हुए, इन सबको ब्रह्म की अभिव्यक्ति में हेतु बताया गया है। \(^2\) उसी की शक्ति इनमें व्याप्त है। ब्रह्म स्वयं तो सब प्रकार की सीमाओं से सर्वथा पर है।

पंचम खण्ड में वाक्य इन्द्रिय के विषय में प्रस्तूत विवेचन किया गया है। यहाँ गृह्य-शक्ति, विभिन्न धारणाएं तथा मनों के भीतर निम्न शक्ति एवं द्वार की शक्ति के विषय में विवेचन किया गया है। अन्य सभी पदार्थों का वाचन करने वाली वाणी भी ब्रह्म का वाचन करने में समर्थ नहीं है। ब्रह्म वाणी की सीमा से सर्वथा पर है। \(^3\)

सभी खण्ड में बुद्धि की उत्पत्ति के विषय में विकस्वादी निश्चल उपदार्थ से ही बुद्धि तत्त्व की उत्पत्ति होती है। \(^4\) के तात्त्विक अतिमानत तत्त्व को ही संसार में व्याप्त बुद्धि अथवा मन का दौरा बताया गया है। वस्तुतः यही संसार तथा जीव का नियन्त्रक तत्त्व है। श्री अरविन्द के मत में यही संसार का मूल कारण है। \(^5\)

1. It is not metaphysical abstraction, no void silence, no indeterminate Absolute which is offered....that which is here shadowed, is there found.
Sri Aurobindo. The Upanishads, P-161
2. Neither mind, life, sense and speech nor their objects and expressions are the reality which we have....their utilities.
Sri Aurobindo— The Upanishads, P-166-167
3. Speech Creates, expresses but is itself a creation and expression. Brahman is not expressed by speech but speech is itself expressed by Brahman.
Sri Aurobindo-The Upanishads, P-171
4. Mind beyond mind superior to its creations and originate of the cosmos.
Sri Aurobindo. The Upanishads, P-179
तपस्म खण्ड में आत्मज्ञान, आत्मज्ञान के साधन, अनितिपत तत्त्व तथा अतिमानस तत्त्व के कार्य आदि के विषय में विवेचन किया गया है।
अष्टम खण्ड में विभिन्न कोश, विश्वास, प्रश्नं, संवाद और अन्य सौंदर्य जैसे बुद्धि के कार्यों का विस्तृत विवेचन किया गया है।
नवम खण्ड में संवाद, उसके विभिन्न भेद-उपभेद तथा उसके सम्बन्धित अनेक तथ्यों के विषय में चर्चा की गई है।
दसम खण्ड में प्राण अथवा जीवनी अस्तित्व क्या है? उसके कार्य, जीवन-विविधता तथा उसके सम्बन्धित विभिन्न पहलुओं का व्याख्यात्मक विवेचन किया गया है।
एकादश खण्ड में अनितिपतन्त्रवस्था, ब्रह्मज्ञान, मृत्यु एवं आत्मा का प्रकाश, लोक, आत्मज्ञान तथा उसके विभिन्न अवस्थाओं के विषय में व्याख्या की गई है।
द्विदश खण्ड में मानसिक अनुभव के विभिन्न भेदों का व्याख्यात्मक विवेचन किया गया है।
श्चर्दग्रहण खण्ड के अनुसार देवता किसी विशिष्ट रूप से स्वामी नहीं हैं अतः ब्रह्म को ही मानसिक द्वारा आत्मा विशिष्ट किया गया है।
अति खण्ड में श्रीमद्भगवद्गीता, उपनिषदों में स्वयं देवताओं की अवस्थाओं के बारे में विभिन्न के तत्त्व-तत्त्व सम्बन्ध अर्थात् ब्रह्म को मानसिक विशिष्ट के विषय में विवेचन किया गया है।
धृष्टिगत खण्ड में देवता की अवस्था व आत्मात्मा की उच्चता, ब्रह्म के सन्तान शारीरिक तथा सन्तान शारीरिक आदि को बताते हुए, उपनिषदों में विषय को पुष्टि प्रदान की गई है।
पौड़िग्रहण खण्ड में मनुष्य, देव, ब्रह्म में बाय़ सामान्य, सामाजिक में प्रति ब्रह्मानुष्य के कर्म, कर्म निबन्धित, ब्रह्मलोचन पुस्तक के कर्म तथा "साक्षरतानिक मुक्ति" के विषय में विस्तृत विवेचन किया गया है।
इत्यादि के अविद्यालय, भी श्री अरविन्द ने अलग-अलग केनोपनिषद्दें पर कुछ लेख किया है जिसमें ईश्वरपनिषद्दें तथा केनोपनिषद्दें को दुर्लभतम समीक्षा की गई है।
ईश्वरपनिषद्दें जित प्रकाश ब्रह्म और ज्ञान तथा आध्यात्मिकता एवं सामान्य व्याख्या के
लामान्य कर्मों का समन्वय करता है उसी प्रकार केनोपनिषद् भी आत्मा और परमात्मा तथा हमारी व्यक्तिगत शिक्षा को समझा सार्वभौम, अनन्त वैदिक शिक्षा में समाहित करने की प्रशंसा देता है। दोनों के अन्तिम लक्ष्य मोह होने पर भी दोनों के प्रतिपाद दो धाराओं के समान पृथक हैं। ईशोपनिषद् सौधे-सौधे जगत को ब्रह्म का आत्मवात मानकर दोनों के सम्मत ज्ञान को ही परम गुरु मानता है जबकि केन्, मन, बुद्धि तथा इंद्रियों के विश्लेषणात्मक ज्ञान के प्रयास इतने तब के भीतर निम्तु शासित के रूप में ब्रह्म को सत्ता स्वीकार करता है। इसीलिए श्री आरविन्द ने "आत्मा और इन्द्रिया" शीर्षक से इन दोनों के तत्वों का पृथक विवेचन किया है। यह तिथियणी अभूती है।

कठोपनिषद्—इत्तुलुपनिषद् का अनुवाद सर्वप्रथम तन 1909–1910 में "कर्मयोगिन" नामक पत्रिका में प्रकाशित हुआ। तन 1919 में इतका प्रकाशन एक पृथक पुस्तक के रूप में किया गया। तत्परतार 1952 में गुनः संगोधित करके इसे "उपनिषद" नामक ग्रंथ के एक खंड के रूप में प्रकाशित किया गया। इत्तुलुपनिषद् पर केवल अनुवाद ही प्राप्त होता है। ब्रह्म तत्त्व का विवेचन करने पर भी इस पर किसी प्रकार को कोई टिथियणी उपलब्ध नहीं है।

श्री आरविन्द द्वारा इत्तुलुपनिषद् का केवल अनुवाद किये जाने पर भी, यह अपूर्वता का योगकर्ता है। किसी विशिष्ट पत्रिकाकारिक शब्द अथवा उनके निद्रान्त को पुरूष प्रदान करने वाले किसी शब्द तमुह पर यदि वे शांकर मंत्र से भिन्न राज्य बनते हैं तो उन्हें उसे व्यक्तिगत पाद टिथियणी में निर्दिष्ट किया है।

1. Isha Upanishads is concerned with the problem of God and world and consequently with the harmonising of spirituality and ordinary human action, so the Kena is occupied with the problem of God and Soul, and the harmonising of our personal activity with the movement of infinite energy and the supremacy of the universal will.

Sri Aurobindo  The Upanishads, P- 527
अनुवाद मात्र होने के कारण, विषय को स्पष्ट करने के लिए अन्य उपनिषदों पर रवित टिप्पणियाँ सहायक सिद्ध होती हैं।

इतने उपनिषदों में ब्रह्म, ब्रह्मचारी, ब्रह्मचारी, ब्रह्मचारी, कर्म सिद्धान्त आदि को स्पष्ट करने के लिए केन और ईशोपनिषद पर रवित टिप्पणियाँ सहयोगी हैं। यथास्थान अनुवाद के नीचे उन्होंने अपने सिद्धान्त को ईर्षित करने वाले तथ्यों का भी निर्देश किया है। उन्होंने शंकर शास्त्रुके भाष्य के साथ अपने मत की भी यत्र-तत्र आवश्यकतानुसार समीक्षा की है। उनका अनुवाद केवल अनुवाद होने पर भी परम्परा-वादी विवाद के स्थान पर नवोन्म, तत्त्वज्ञानी, तत्त्वज्ञानी, तत्त्वज्ञानी, कात्यायनी के वर्ण उल्लेख वाले सिद्धांतों का स्थापना करता है।

प्रारंभिक --- इस उपनिषद का वर्तमान स्तर पर ही मूल प्रारंभिकता का रूप है।

अन्य उपनिषदों को भाष्य इसका कहीं अन्यत्र प्रकाशन नहीं किया गया। तर्कप्रथम उनके "उपनिषद" नामक ग्रन्थ में ही इसकी मूल हस्तलिपि का प्रकाशन किया गया।

श्री अरविन्द ने इस उपनिषद की समग्र विषय-वस्तु का अनुवाद किया है।

इस पर अनुवाद के अतिरिक्त कोई अन्य टिप्पणी आदि उन्होंने नहीं लिखी है।

शंकर-मत से किसी पारमार्थिक शब्द पर मतवालिन्य होने पर उसका निर्देश पाद टिप्पणी में किया गया है।

इत सम्मान में वेदान्त सम्मान शत्रुति-प्रक्षिण वा विद्वत्ति विविध किया गया है।

इसके अनुसार तर्कप्रथम सत्ति के आरम्भ में भील्ल प्रदर्शन का कामना ते प्राप्ति ने राम तथा प्राणा नामक मिथुन को उत्पत्ति को।

इसी मिथुन से जन्म को सुधित हुई है।

आचार्य शंकर ने राम और प्राणा का अर्थ कम्या: तोम तथा तथा खाने वाला व अर्थ किया है। जो विषय वस्तु के समझने में व्यवधान उत्पन्न करता है।

दूसरी और श्री अरविन्द ने इन दोनों शब्दों का अर्थ वस्त्रों और पुस्तक के मिथुन के रूप में किया है जिसके जन्म को सुधित होती है।

परमार्थिक शब्दावली में इसकी ही उल्लेख

1. रामे तोममत्र प्राणों चारितमतारायणाः। प्रारंभिकता । 4 शंकरभाष्य
2. Prana, the life who is male and Rayi the matter who is female.

Sri Aurobindo. The Upanishades P-296
पदार्थ और जीवनी शक्ति की संज्ञाओं से अभिवृद्धि किया है। दोनों ही अर्थ तक संगत और सटीक हैं।

मुण्डकोपनिषद् --- इस उपनिषद को भी रामचरित माधव के अनुवाद श्री अरविन्द ने किया है। तर्कप्रथम इसका प्रथम प्रकाशन "कर्मयोगिन" नामक पत्रिका में लनु 1909 में किया गया। तनु 1920 में इसें बुध संस्थान करने के बाद "अर्य" नामक पत्रिका में इसका पुनः प्रकाशन किया गया। उनके "उपानिषदों" नामक ग्रन्थ में इसके पुनः संस्थापित रूप को यथार्थ प्रकाशित किया गया है।

मुण्डकोपनिषद् में ब्रह्म तत्त्व का विस्तृत विवेचन किया गया है, अतः वेदान्त में इसका महत्वपूर्ण रूप है। परन्तु श्री अरविन्द ने अनुवाद के अर्थितक किती भी प्रकाश का लेखन इस पर नहीं किया है। अन्य उपनिषदों को भी अनुवाद करते समय उन्होंने विशिष्ट तत्त्वों का उल्लेख पाद-टिप्पणियों में किया है। आचार्य शंकर से वेदभक्त होने पर उन्होंने शार्कर अभिवृद्धि अर्थ को तथा अपने द्वारा मान्य अर्थ को तक संस्थित पाद-टिप्पणियों में सम्भाया है।

उपनिषदों में प्रयुक्त "श्रुत" शब्द का अर्थ आचार्य शंकर जन्म का कारण "तुच्छ" करते हैं। केवल तुच्छ से सम्बन्ध तथा सम्बंध नहीं है। उसके भीतर विवेकचार गुण तत्त्व ही प्रमुख होते हैं। इतने श्री अरविन्द ने "श्रुत" का अर्थ "संसारातीत सत्ता" किया है। उन्होंने इस शब्द को पाद-टिप्पणी में विस्तार-पूर्वक व्याख्या की है।

माणुकोपनिषद् --- इस उपनिषद का अनुवाद संस्थान: अन्य उपनिषदों से परवर्ती काल में किया गया है। इसकी मूल प्रतिलिपि का ही प्रकाशन उनके

1. Shankara takes it so in the sense of semen Virile, which is the cause of birth into the cosmos but it is possible that it means rather: Pass beyond this brilliant universe! the radiant world which has just been spoken of, to the greater Light which is its abidity place and source, the supreme Brahman.
Sri Aurobindo. The Upanishads, P-284
"उपनिषदः" नामक ग्रन्थ में किया गया है।

इस उपनिषदः के मूल द्वारा मन्त्रों का अनुवाद श्री अरविन्द ने किया है।
आचार्य शंकर ने इसके मूलपाठ के साथ-साथ गौड़पाठ को कारकिष्कों पर भी भाष्य
लिखा है। श्री अरविन्द ने कारकिष्कों का अनुवाद पूर्व मूर्तित्वविवेक के रूप में किया है।
माण्डलयोगपरिषदः से उनके अनुवाद में इसका कोई सम्बन्ध नहीं है।

केवल द्वारा मन्त्रों का उपनिषदः होने के कारण इसका अनुवाद भी
अल्पमात्यपरिमाण है। इस उपनिषदः में आत्मा की चार स्थितियों का उल्लेख
किया गया है। पूर्व मूर्ति प्रकार का विवेचन न होने पर भी अनुवाद से ही श्री
अरविन्द के मत में ये चार अवस्थाओं क्या हैं? कैसी हैं? क्या हैं? आदि तथ्यों का झाँक होता
है। अन्धकार बालों में इस उपनिषदः का अनुवाद आचार्य शंकर से किती प्रकार के
विभिन्न को व्यक्त नहीं करता है।

इस उपनिषदः में और का भी विस्तृत विवेचन किया गया है। ग्रन्थ का
सम्पूर्ण समकालीन झाँक ही आत्मा की चार अवस्थाओं का झाँक है तथा परम
तत्त्व की प्राप्ति है।

पैरोपिषदः — इस उपनिषदः का अनुवाद श्री अरविन्द ने बडौदा में किया, तथा

इसमें किया गया है। इस उपनिषदः पर भी केवल अनुवाद जो प्राप्त है।

पैरोपिषदः में वेदांत अभिमत शृणुत-प्रक्रिया का विस्तृत विवेचन किया
गया है। इस उपनिषदः पर किती प्रकार की टिप्पणी आदि की प्राप्ति न होने
पर भी उनके ग्रन्थ "लाइफ डिवाइजन" की सहायता से उनके द्वारा मान्य शृणुत-विवेचन
तथ्यों को भली प्रकार जाना जा सकता है तथा ही अन्य उपनिषदः के अध्ययन के
उपरान्त, पत्र-पत्र उनके द्वारा व्यक्तित्व तथ्यों के आयार पर इस उपनिषदः के प्रतिपाद
विषय को समझा जा सकता है।

वे आचार्य शंकर के समान जगतः को प्रारूपित्त सत्ता स्वल्प अथवा संकल्प
रूप तप के द्वारा उत्पन्न नहीं मानते हैं। उनके मत में जगतः भी ब्रह्म ही है, वह
ब्रह्म के ही द्वितीय पहलू के समान है। ब्रह्म के समान तत्त्व-स्वल्प है, केवल माया-
ब्रह्म की साकार अभिव्यक्ति है। उसे खिसकी भी प्रकार ब्रह्म से पृथक् नहीं माना जा सकता है।

इसकी उत्पत्ति के लिए श्री अराध्यदेव ने नित्यानंद वैज्ञानिक प्रक्षेपण का लक्षात् किया है। प्रारंभिक युग में भी राय और प्राण को स्त्री और पुरुष के युगल रूप में स्वीकार करके उन्हें अपने सिद्धांत को एक त्रुटि का आधार प्रदान किया है। वे ब्रह्म के सत् पिता, आनंद स्वरूप ने ही संसार की उत्पत्ति मानकर उसे सत्ता स्वरूप, वैदित्त्य कृत्तिकाशी तथा आनन्द रूप मानते हैं। उनके मत में सृष्टि भी ब्रह्म का स्वभाव ही है।

तैतत्तरीयोपनिषद् -- इन उपनिषदों को सर्वप्रथम सन 1918 में "आर्य" नामक पत्रिका में प्रकाशित किया गया। इस पत्रिका में केवल अनुवाद का ही प्रकाशन किया गया था। तत्पचाद इसमें संशोधन करके, इसके साथ एक नवीन लघु टिप्पणी का भी प्रकाशन हुआ। उनके "उपनिषद" नामक ग्रंथ में इतना यही परिभाषित रूप प्रकाशित किया गया है।

इस उपनिषद के रचित अनुवाद भी यथार्थ पूर्ण है तथापि परवर्तकाल में इसके उपर लिखी गई टिप्पणी अनुवाद के समझने के लिए एक सौपण के समान महत्त्वपूर्ण है। इसमें ब्रह्म के स्वरूप आदिके विषय में तैतत्तरीयोपनिषद के मूल पाठ के आधार पर विवेकतृत्व किया गया है। ब्रह्म के भौतिक - अभौतिक तथा उसकी प्रक्रिया और अवर दो विषयों के बारे में भी चर्चा की गई है। परन्तु की अवस्था ब्रह्म के लिए जीवाश्चरण की अवस्था है। अवस्था की अवस्था में ब्राह्मणरूप ब्रह्म अवृद्ध, अनन्त, निर्परिकार है।

समतः ज्ञान ब्रह्म का ज्ञान प्राप्त करने के लिए अध्यात्मिक है, किन्तु कोष ज्ञान ब्रह्म की प्राप्ति नहीं कर सकता है। अज्ञान केवल भौमात्र न होकर, अवस्था में वस्तु का आरोपमात्र है। अवस्था के अर्थ में ज्ञान ब्रह्मबल की प्राप्ति है। इसके लिए केवल वैदित्त्य स्वरूप का ही ज्ञान आवश्यक है।

1. The Knower of Brahman sees all these lower things in the light of the Highest, the eternal and superficial as a translation of the internal and essential, the finite from view of infinite.

Sri Aurobindo- The Upanisads, P-350
One who is the maker of works and their fruits, because the mood-stuffs of Nature cleave to Him, He also reapeth from all work that he hath done and world is His shape and the stuff of His working is threefold and threescore the paths of His travel: Lo, the master of Life, by the momentum of his own works He moveth in the centuries.

sri Aurobindo. The Upanishads, P-373
है तथा उसका मार्ग भी ब्रह्म है। 1

इति प्रत्यक्ष अन्य बहुत से मन्त्रों पर भी उन्होंने वैदिकविहित अनुवाद के रूप में विषय को अधिक स्पष्ट करने के लिए लेखन किया है। इस उपनिषद पर उपलब्ध उनका अनुवाद इत्यादि से भी महत्वपूर्ण है कि इस पर आयार्य संकर का भाष्य प्राप्त नहीं है। जो भाष्य प्राप्त है, वह विवादास्पद है। अन्य किसी विद्वानु (आंगल विद्वानों के अनुवाद के अतिरिक्त) का भी भाष्य इत न प्राप्त नहीं है। यथाविध इत उपनिषद को अन्य उपनिषदों की तुलना में परस्पर माना जाता है, तथापि इसमें विरितता तत्त्व विवाद किसी भी दृष्टिकोण से निम्नतरताय नहीं है। इसका कार्य विश्व ईश्वर, ब्रह्म, आत्मा, परमात्मा, भ्रमण, मोक्ष आदि ही है।

छान्दोग्योपनिषद — इसका अनुवाद श्री अरविन्द ने केवल आंगिक रूप में ही किया है। उन्होंने प्रथम आयार्य के केवल दो खण्डों का ही अनुवाद किया है, तथा ही इत उपनिषद पर एक लघु टिप्पणी भी लिखी है।

श्री अरविन्द ने उपनिषद के जिन दो खण्डों का अनुवाद किया है उनमें तत्त्व अम का ही विवेचन किया गया है। संबंध: इसीलिए उन्होंने जो टिप्पणी लिखी है वह केवल अनुसूचित भाग के ही अंक लिखी गई है। सब उपनिषद का विवेचन उनमें नहीं है। वह केवल "अम" पर ही आधारित है। अम ही उपनिषदों का तत्त्वक दृष्टिकोण सर्वव्यापक विवाहर है, क्योंकि यह ब्रह्म का ही द्वितीय नाम है।

1. After native version There is one who maketh works and their fruits to them, for the moods of Nature cleave to Him, this is He that enjoyeth the works He hath done, and the world is His body and He hath three modes of His nature and the road of His travel are likewise three. 
Sri Aurobindo. The Upanishads P-373
श्री अरविन्द के मत में छान्दोग्योपनिषद आरम्भ से ही उत्तम और पूर्ण मार्ग का कथन करता है। यही च्यातिक को ब्रह्म में लीन होने के लिए प्रेरित करता है। यही प्रतीकात्मक ब्रह्म अथवा आत्मा का वाणिज्य करता है। आत्मा ही एकमात्र ऐसा प्रतीक है जो प्रतीक के साथ ही प्रतीकात्मक पदार्थ भी है। ऊपनिषद होने के कारण ही लेखन: उन्होंने इसका समग्र अनुवाद नहीं किया, स्पर्शभाषा का लेखन होने के कारण इस ऊपनिषद के विषय में वे अपने विचार एवं सिद्धांतों को पूर्णतः स्पष्ट नहीं कर पाये हैं।

श्री अरविन्द ने इसका भी सम्पूर्ण अनुवाद न करके, स्पर्श मात्र किया है। उन्होंने प्रथम अध्याय के प्रथम अवाकऽ न का अनुवाद किया है तथा उसी के अंतर्गत लघुंदित्वणा की रचना की है। यह समस्त लघुंदित्वणा सन 1953 में "श्री अरविन्द मन्दिर" नामक वार्षिक पत्रिका में प्रकाशित की गई। उसका मूल स्नातक ही श्री अरविन्द के "उपनिषद" नामक ग्रंथ में संगठित किया गया है।

श्री अरविन्द ने इसका भी सम्पूर्ण अनुवाद न करके, स्पर्श मात्र किया है। उन्होंने प्रथम अध्याय के प्रथम मन्त्र "उष्णा वै अत्य तिरः" को विस्तृत व्याख्या की है। इसके आरम्भ में उन्होंने ऊपनिषद की विषय-वस्तु तथा उस पर अनेक सिद्धांतों द्वारा रचित लघुंदित्वणा की समीक्षा की है। उनके मत में आचार्य शंकरेन्द्र उपनिषदों के सिद्धांतों पर अपने सिद्धांतों को आरोपित करके भाष्य लिखे हैं। उनका लेख ऊपनिषदों के मूल तत्त्वों को अपेक्षा उनके विचारों एवं सिद्धांतों के ही परिवार्य है।

1. The Chhandogyopanishad we see from its first and introductory sentences, is to be a work on the right and perfect way of devoting oneself to the Brahman...Aksaram.
Sri Aurobindo. The Upanishads, P-392
2. The Great Aranyak.
3. Nevertheless it remains true that Shankara's commentary is interesting not so much for the light it sheds on the Upanishad as for its depression into his own philosophy.
Sri Aurobindo. The Upanishads, P-398
अपनी टिप्पणियों को रचना करते समय उन्होंने उपनिषद के सारगर्भित रहस्यमय तथ्य को ध्यान में रखते हुए, टिप्पणियों में इस तथ्य को बताया है कि उनका उद्देश्य बृहदारण्यकोपनिषद के दर्शन पर प्रकाश डालना नहीं, अतिरिक्त इसकी भाषा शैली में नियुक्त तत्त्वों, विचारों के रूप में करना है। उनके द्वारा रचित टिप्पणियों का उद्देश्य बृहदारण्यकोपनिषद के अध्ययन के लिए एक मुझे आधार का निर्माण करना है।

इस उपनिषद में अर्थमैथ का प्रतीक के रूप में विवेचित किया गया है। अर्थमैथ यज्ञ का प्रमुख तत्त्व जगत के पदार्थों का प्रतीक है। अतः सुख और गंगा या परिप्रेक्ष्य है। उसे समय का भी प्रतीक माना गया है।

1. It is not my intention here nor is it in my limits possible to develop the philosophy of the Great Aranyaka Upanishad but only to develop with just sufficient amplitude for the entire clearance the ideas contained in its language and involved in its figures. The business of my commentary is to lay down a foundation, it is for the thinker to build superstructure.
Sri Aurobindo. The Upanishads, P-399

2. For as day is the symbol of time of activity night of time of inactivity, so dawn images the imperfect but pregnant beginning of regular cosmic action.
Sri Aurobindo. The Upanishads, P-401
अर्थात शब्द को वे विभिन्न दृष्टिकोणों से ख्यातपरिपूर्वक व्याख्या करते हैं। इसके विभिन्न प्रतीकात्मक अर्थों के विज्ञ में उन्होंने टिप्पणी में विवेकन किया है। उपरोक्त का उत्तर अर्थ का सिद्ध स्मृतिप्रात:काल का प्रतीक बताया गया है।

दिन-रात को भी विश्वासीलता और विश्वासबल्क ने प्रतीक माना गया है। दार्शनिक शब्दावली में इन्हें व्याख्या और अव्याख्यता के प्रतीकों के स्थान में भी बताया गया है।

टिप्पणी के अन्त में उन्होंने मृत्यु, मोक्ष, बन्ध आदि विषयों पर प्रकाश डाला है। व्यासदास मुनिकात्मक शब्दों के अर्थों पर विभिन्न दृष्टिकोणों से प्रकाश डाला गया है।

यदापि श्री अरविन्द ने बुद्धार्थस अध्ययनमण अध्ययन में स्थापित तथ्यों का एक समावेश के समान ब्रह्म अवधारणा हो जाता है।

कैल्याणकल्याण -- कैल्याणकल्याण पर श्री अरविन्द ने आर्टिक लेखन किया है।
-------------------
इसके केवल प्रथम मन्त्र का हो अनुवाद उन्होंने किया है। इस उपनिषद को गणना प्रथम उपनिषदों में नहीं होता है। उन्होंने इसके महत्त्व को ध्यान में रखकर इस पर एक छोटी सी टिप्पणी भी लिखी है, जो वास्तव में उपनिषद का परियोजना देने में पूर्णत: क्षम है।

इसमें "वर्मेश्वर" को ही ब्रह्म माना गया है। हिरण्यगर्भ कहा है।

ब्रह्म नहीं है। कह अर्थ है, मनुष्य की सीमा से परे है। वह स्वयं को कभी प्रकट नहीं करता है। हिरण्यगर्भ प्रत्यक्ष चुंब में एक दिव्य पुस्तक को अपने और जीव के बीच स्थापित करता है। यह दिव्य पुस्तक ही "वर्मेश्वर" होता है। इसी में

1. Day is the symbol of continual manifestation of material things the Vyaktra, the manifest or fundamentally is sat, in infinite being, Night is the symbol of their continual disappearance into Avayaktra, the unmanifest or finally into Asat, into infinite non-being.
Sri Aurobindo. The Upanishads, P-406
दिशागति की शक्ति रहती है, जिससे नामस्वात्मक संसार की सूचना होती है।

इस उपनिषद में कैवल्य प्रारम्भ के भी दौर मार्ग बताये गये हैं। प्रथम
विधा द्वितीय स्वर्यापार स्व द्वितीय भूरिया। इसमें दूसरे ही परम्परा है। वह
तब से परे होने के कारण 'नेति-नेति' है। वह एक होते हुए भी, अनेक है, निष्ठवीन
है तथा पुण्य-प्रभृति के कारण निमुद्द तत्त्व है।

निलक्ष्यस्यपिनिन्दुः -- इस उपनिषद के कुछ अंशों का अनुवाद श्री अरविन्द ने बड़ौदा में

किया। इस अनुवाद का 'उपनिषद' नामक ग्रन्थ के अंतर्गत
अन्यत्र कहीं प्रकाशन नहीं हुआ। इसके कुछ मूल्यों का अनुवाद तथा एक लघुकाय
टिप्पणी का संग्रह उसके इस ग्रन्थ में किया गया है।

इस उपनिषद में शिव के रूप से भविष्य का वर्णन किया गया है। टिप्पणी
में श्री अरविन्द ने शिव के अवरोध तथा विद्वान्धकता की कल्पना की है। शिव
का तात्त्विक उसके अधिनियमन का स्तर है। योगाभ्यास का दर्शन अतीत
शक्ति का स्तर है। शिव पार्श्वों को नष्ट करने वाले हैं। वे ही लघुकाय दीर्घ
हैं। वे संसार को उत्पन्न करने वाले हैं। वे भयानक, कृपों और विनाशकारी
देवता हैं। तड़कर करने और दमकल करने में वे दैवी तत्त्व हैं।

1. He places in each cycle a Brahman or divine man between His
and the search and worship of men. It is Brahman or divine
man, who is called Parameshthi....

2. He is all and yet He is 'neti neti' He is one and yet He is
many. He is Para brahman and He is Parmeshvara. He is male
and female... all underlies, all the workings of Prakriti
as its reality and self.
Sri Aurobindo. The Upanishads. P-416_417

3. Rudra is the Supreme Ishawara, creator of the world, He is
the dreadful, wrathful and destroying Lord, swift to slay
and punish....Rudra is being saluted as a God of might and
wrath.
Sri Aurobindo. The Upanishads. P-424
सामान्यतः भी शिव की कल्पना तंत्रार्थ शक्ति के रूप में की गई है। वेदों में भी उनकी स्थिति शक्ति और क्षेत्र के देवता के रूप में की गई है।

उपनिषदों के अनुवाद के अतिरिक्त श्री अरविन्द ने गोदामपाद की कारकियाँ का तथा वेदान्तसार का भी अनुवाद किया है। उन्होंने मण्डूक्योपनिषद का तो अनुवाद मात्र किया, किन्तु उससे सम्बन्धित द्वारा कारकियाँ का तथा उन पर लिखे गये शाकर भाष्य को मूल रूप में उद्धृत करके, उसका भी अनुवाद किया है। आचार्य शंकर ने मण्डूक्योपनिषद के मन्त्रों के ताथ-साथ कारकियाँ पर भाष्य लिखा है। श्री अरविन्द ने केवल द्वारा कारकियाँ का ही अनुवाद किया है। अन्य कोई रिप्लांस अथवा लेख उन्होंने इत तिथिया पर नहीं लिखा है। अपने मत वैधिक को उन्होंने अनुवाद में ही व्यक्त किया है शाकर भाष्य से अनुवाद में ही यथास्थान आचार्यकलात्मक सर्वात्मक अनुमान शक्ति की है।

वेदान्तसार के भी कुछ अंशों का अनुवाद उन्होंने किया है। इसमें उन्होंने उनके अंशों का अनुवाद किया है जिनपर तदानन्द के द्वारा अधिक सारगमित तथ्य प्रकट किये गये हैं, इतिहासकार उन्होंने इतका अनुवाद करते समय शीर्षक का नाम भी "तदानन्द को दुर्लभ में वेदान्त का सार" ही रहा है। इसके अन्तर्गत उन्होंने ब्रह्म, अथिकारी, अनुक्षेत्र, प्रयोजन आदि को व्यक्त करने वाले तथा लोक आदि ते सम्बन्धित विचारों के सम्बन्धित पहलों का ही अनुवाद किया है।

उपनिषदों साहित्य पर श्री अरविन्द द्वारा किया गया लेख स्थिर में बेलड़ा है। उनसे पूर्व केवल आचार्य शंकर का ही भाष्य एकमात्र उपनिषदों पर उपलब्ध तामूलगी माना जाता रहा है। उनके प्रचार अथवा विद्वानों ने शाकरभाष्य को आधार मानकर ही उपनिषदों पर लेख किया है। उपनिषदों के मूलस्था का स्पर्श शंकर के बाद किती भी भारतीय अथवा अंग्रेज़ विद्वान ने नहीं किया। इसलिए विद्वानों का लेख उपनिषदों पर न होकर शाकर-भाष्य पर ही आधारित है।

1. The SADANANDA'S Essence of Vedanta.
एकमात्र श्री अरविन्द ने इत परम्परा का खंडन करके उपनिषदों के मूल पाठ के आधार पर तर्कसंगत, पूर्ण एवं सटीक, तथ्यपूर्ण शैली में अनुवाद करके अपने निदान्तों को स्थापना की है। उनके अनुवाद के अध्ययन के बाद ही शाँकर-भाष्य और मूल उपनिषदों पाठ के बीच की भिन्नता को स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है।

यदि श्री अरविन्द द्वारा किया गया लेख प्रत्येक उपनिषद पर पूर्ण अवस्था में होता, तो समग्र उपनिषद साधनत्य को समझने के लिए अत्यन्त लाभकारी होता। इतनी कम सामग्री होने पर भी वे अपने निदान्तों को समझने में पूर्णतः समर्थ हैं। उपनिषदों के प्रिय न मानक के विषय में उनके गम्भीर चिंतन, मनन का केवल इत तथ्य से ही अनुमान किया जा सकता है कि ईश और केन जैसे छोटे उपनिषदों पर अत्यन्त विस्तृत दिमागियाँ लिखने के बाद भी उन्हें तदैव अवृत्तता का ही अनुभव होता रहा है।

XX